## 8. चौबीस तीर्थंकर स्तवन

जो अनादि से व्यक्त नहीं था त्रैकालिक ध्रुव ज्ञायक भाव।
वह युगादि में किया प्रकाशित वन्दन **ऋषभ** जिनेश्वर राव॥१॥

जिसने जीत लिया त्रिभुवन को मोह शत्रु वह प्रबल महान।
उसे जीतकर शिवपद पाया वन्दन **अजितनाथ** भगवान॥२॥

काललब्धि बिन सदा असम्भव निज सन्मुखता का पुरुषार्थ।
निर्मल परिणति के स्वकाल में **सम्भव** जिनने पाया अर्थ॥३॥

त्रिभुवन जिनके चरणों का अभिनंदन करता तीनों काल।
वे स्वभाव का **अभिनन्दन** कर पहुँचे शिवपुर में तत्काल॥४॥

निज आश्रय से ही सुख होता यही सुमति जिन बतलाते।
**सुमतिनाथ** प्रभु की पूजन कर भव्यजीव शिवसुख पाते॥५॥

**पद्मप्रभ** के पद-पंकज की सौरभ से सुरभित त्रिभुवन।
गुण अनन्त के सुमनों से शोभित श्री जिनवर का उपवन॥६॥

श्री **सुपार्श्व** के शुभ सु-पार्श्व में जिनकी परिणति करे विराम।
वे पाते हैं गुण अनन्त से भूषित सिद्ध सदन अभिराम॥७॥

चारु चन्द्रसम सदा सुशीतल चेतन **चन्द्रप्रभ** जिनराज।
गुण अनन्त की कला विभूषित प्रभु ने पाया निजपद राज॥८॥

**पुष्पदन्त** सम गुण आवलि से सदा सुशोभित हैं भगवान।
मोक्षमार्ग की सुविधि बताकर भविजन का करते कल्याण॥९॥

चन्द्रकिरण सम **शीतल** वचनों से हरते जग का आताप।
स्याद्वादमय दिव्यध्वनि से मोक्षमार्ग बतलाते आप॥१०॥

त्रिभुवन के श्रेयस्कर हैं **श्रेयांसनाथ** जिनवर गुणखान।
निज-स्वभाव ही परम श्रेय का केन्द्र बिन्दु कहते भगवान॥११॥

शत इन्द्रों से पूजित जग में **वासुपूज्य** जिनराज महान।
स्वाश्रित परिणति द्वारा पूजित पञ्चमभाव गुणों की खान॥१२॥



निर्मल भावों से भूषित हैं जिनवर **विमलनाथ** भगवान।
राग-द्वेष मल का क्षय करके पाया सौख्य अनन्त महान॥१३॥

गुण अनन्तपति की महिमा से मोहित है यह त्रिभुवन आज।
जिन **अनन्त** को वन्दन करके पाऊँ शिवपुर का साम्राज्य॥१४॥

वस्तुस्वभाव धर्मधारक हैं धर्म धुरन्धर नाथ महान।
ध्रुव की धुनमय धर्म प्रगट कर वन्दित **धर्मनाथ** भगवान॥१५॥

रागरूप अंगारों द्वारा दहक रहा जग का परिणाम।
किंतु शांतिमय निजपरिणति से शोभित **शांतिनाथ** भगवान॥१६॥

कुन्थु आदि जीवों की भी रक्षा का देते जो उपदेश।
स्व-चतुष्टय में सदा सुरक्षित **कुन्थुनाथ** जिनवर परमेश॥१७॥

पंचेन्द्रिय विषयों से सुख की अभिलाषा है जिनकी अस्त।
धन्य-धन्य **अरनाथ** जिनेश्वर राग-द्वेष अरि किए परास्त॥१८॥

मोह-मल्ल पर विजय प्राप्त कर जो हैं त्रिभुवन में विख्यात।
**मल्लिनाथ** जिन समवशरण में सदा सुशोभित हैं दिन-रात॥१९॥

तीन कषाय चौकड़ी जयकर मुनि-सु-व्रत के धारी हैं।
वन्दन जिनवर **मुनिसुव्रत** जो भविजन को हितकारी हैं॥२०॥

**नमि** जिनवर ने निज में नमकर पाया केवलज्ञान महान।
मन-वच-तन से करूँ नमन सर्वज्ञ जिनेश्वर हैं गुणखान॥२१॥

धर्मधुरा के धारक जिनवर धर्मतीर्थ रथ संचालक।
**नेमिनाथ** जिनराज वचन नित भव्यजनों के हैं पालक॥२२॥

जो शरणागत भव्यजनों को कर लेते हैं आप समान।
ऐसे अनुपम अद्वितीय पारस हैं **पार्श्वनाथ** भगवान॥२३॥

महावीर सन्मति के धारक वीर और अतिवीर महान।
चरण-कमल का अभिनन्दन है वन्दन **वर्धमान** भगवान॥२४॥